फेर ठट्ठे से लाठी बन्दर, नाव ऊपर चढ़े ।
तहां से पहुंचे मसकत, सरत थी वायदे ॥३०॥

तब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज नाव पर सवार होकर ठट्ठे से लाठी बन्दर होते हुए मसकत बन्दर पहुंचे ।

महामति कहे ए साथ जी, ए ठटठे की बीतक ।
अब कहों मसकत की, जो आज्ञा है हक ॥३१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि यह ठट्ठे नगर की बीतक है । अब श्री राज जी महाराज के हुकम से मस्कत नगर में जो बीतक हुई, उसे कहता हूं ।

(प्र०-२५, चौ०-१०८२)

आए पहुँचे मसकत में, उतर नाव से ।
कांठे दुकान महाव जी की, आए बैठे उन में ॥१॥

मस्कत में पहुँचकर श्री जी नाव से उतरे । समुद्र के किनारे वही पर महाव जी भाई की दुकान थी। श्री जी वही पर आकर बैठ गए ।

पूछी खबर उन नें, उठ के मिले धाए ।
कुसल खेम पूछन लगे, भले आप पहुँचे आए ॥२॥

महावजी भाई को जब श्री जी का पता चला तो वे उठकर दौड़कर मिले । सब कुशलता का समाचार पूछे तथा बोले कि बहुत अच्छा हुआ जो आप यहां पधारे हैं ।

इत बड़ो आदर कियो, लौकिक नाते से ।
आदर भाव करने लगा, खबर बन्द की पूछी इन समें ॥३॥

महाव जी भाई सांसारिक नाते से बड़े आदर भाव से सत्कार करता है । तब श्री जी ने स्वयं महाव जी भाई से बन्ध में आए सुन्दरसाथ के बारे में पूछा ।

विस्वनाथ संग था, श्री बाई जी की दई खबर ।
रूपा राधा संग थी, धाए के पहुंची घर ॥४॥

महाव जी भाई के द्वारा बन्ध की खबर देने पर विश्वनाथ जो लाठी बन्दर से श्री जी के साथ आए थे । उन्होंने बाई जी की सब सूचना लाकर श्री जी को दी । वहां रूपा और राधा बाई श्री बाईजी के साथ थी । जब उन्होंने श्री जी का आना भी सुना तो दौड़कर महावजी भाई के घर आई ।

Nijanand App

ठौर पास दई रहने को, सब मिल हुये खुसाल ।
बातां लगे करनें, बीतक अपनें हाल ॥५॥

अब महाव जी भाई श्री जी को लेकर अपने घर आए और उन्होंने वहां श्री जी के ठहरने की पूरी व्यवस्था कर दी । वहां मिलकर सभी बहुत खुश हुए तथा सबने अपनी-अपनी बीती बातें कही ।

महावजीयें रसोई का, आदर किया इत ।
लगा आप सेवा करने, हाल भाल इन बखत ॥६॥

जब रसोई बनकर तैयार हो गई तो महाव जी भाई ने बड़े आनन्द और उमंग के साथ सबको आरोगाया और बड़ी श्रद्धा से श्री जी की सेवा करने लगा ।

कानजी बेटा उनका, रहे दुकान पर ।
आरोग के फेर बैठे, साथ ठट्ठे की कही खबर ॥७॥

महाव जी का बेटा जो कान्ह जी था, वह अब दुकान पर बैठने लगा । आप श्री जी ने अब आरोगने के बाद ठट्ठे नगर की चर्चा सुन्दरसाथ के बीच कह सुनाई ।

लगी होने चरचा, जो ठट्ठे की बीतक ।
उन समय जो सुख भया, मेहर सुभानल हक ॥८॥

ठट्ठे में श्री राजजी महाराज की मेहर से चिन्तामणि जैसे आचार्य तथा श्री लालदास जी जैसे ज्ञानी चरणों में आ गए तो वहां सब सुन्दरसाथ में खूब आनन्द मंगल हुआ । इसकी सारी चर्चा सुनाई ।

तिनकी बातें करते, बड़ा जो हुआ सुख ।
कसाला जो बंद का, सो भाग गया सब दुख ॥९॥

जब श्री जी ने इस प्रकार ठट्ठे नगर की चर्चा सुनाई तो रूपा और राधा तथा अन्य सुंदरसाथ बहुत खुश हुए तथा बन्ध के सारे दुःख भूल गए ।

इत रूपाबाई राधा, सुनी चरचा तिन ।
श्री राज की तरफों, रोसन हुआ मन ॥१०॥

जब रूपा और राधा ने भी चर्चा सुनी तो उन्हें श्री जी के स्वरूप की पहचान हो गई ।

चरचा मीठी होत है, कोई देवे कान ।
महावजी ने चरचा सुनी, होने लगी पहिचान ॥११॥

श्री जी के मुखारविन्द से जब अखण्ड ज्ञान की चर्चा होती है तो उसे जो भी सुन लेता है, उसके सारे संशय मिट जाते हैं तथा उसे आनन्द होता है । महाव जी भाई ने भी जब श्री जी की चर्चा सुनी तो उन्हें उनके स्वरूप की पहचान हो गई ।

Nijanand App

और लोग आवें सुनने, लगी बातें चलनें ।
दीदार को लोग आवही, बातां लगे सुनने ॥१२॥

अरब जैसे मुसलमानों के देश में मस्कत बंदर में महाव जी भाई के घर जब ऐसे अखण्ड एवं अलौकिक ज्ञान की चर्चा सुनने लगे तब अन्य लोग भी चर्चा के लिए श्री जी के दर्शन भी करते हैं तथा चर्चा भी सुनते हैं ।

इहां दिन दस बीस में, भई जो चरचा जोर ।
दज्जालें इत सुनिया, लगा जो करने सोर ॥१३॥

दस बीस दिन तक इस प्रकार की अखण्ड एवं जाग्रत बुद्धि के ज्ञान की चर्चा होने लगी तो दूसरे धर्मो के लोग भी चर्चा सुनने आने लगे । अपने अनुयायियों का श्री जी के चरणों में जाना सुनकर वहां के कथा कहने वाले गुरू और आचार्यों ने श्री जी के ज्ञान की निन्दा करनी शुरू कर दी ।

दज्जाल अपनी सिपाह में, निन्दा लगा करने ।
ए कहाँ से आये है, मेरे मारनें का मन में ॥१४॥

वे गुरूजन अपने शिष्यों के अन्दर श्री जी के प्रति कहने लगे कि ये ऐसा झूठा ज्ञान कहते है जिसका कोई प्रमाण नही है । ये केवल हमारे धर्म की निन्दा करते हैं । इसलिये इनकी चर्चा सुनने नही जाना चाहिए।

मैं करों लड़ाई इनसों, ए क्या करें मुझको ।
बैठ बाजे दिल में, आये लड़ने को सामों ॥१५॥

तब वहां के आचार्यों एवं कथा करने वाले विद्वानों ने यह सोचा कि हम सब मिलकर इनसे लड़ाई करेंगे । ये कैसे हमारे धर्म की निन्दा करते है । ये परदेशी आदमी हमारा क्या बिगाड़ सकते है । उनमें से कुछ लोग लड़ने के लिये भी चर्चा में आये ।

इहां चरचा कीर्तन होत है, हांस विनोद विलास ।
साथ को धाम धनी बिना, और न कछुये आस ॥१६॥

यहां महाव जी भाई के घर श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा होती है तथा सुन्दरसाथ मिलकर भजन कीर्तन आदि आनन्द मंगल करता है । सुन्दरसाथ को जब अपने धाम धनी की पहचान हो जाती है तो उन्हें किसी की निन्दा से कोई मतलब ही नही रह जाता है ।

Nijanand App

इत दोय चार कीर्तन, नये किये बीतक ।
तूं दुनी को क्या पुकारे, देख तरफ हक ॥१७॥

जब श्री जी को उन कथावाचकों के इस दुष्ट विचार का पता चला तो रात को जोश में चार किरंतन उतरे

१. चल्यो जुग जाए री सुध बिना ।(किरंतन प्र० २१)

२. रे हो दुनियां बांवरी, खोवत जनम गंवार ।(किरंतन प्र० २२)

३. रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना । *(किरंतन प्रकरण २३)*

४. रे मन भूल न महामत, दुनियां देख तूं आप संभार । *(किरंतन प्रकरण २४)*

ऐसी अहंकार और अज्ञानता के वश में डूबी हुई दुनियां को तू क्यों पुकारता है । अपने धनी के चरणों में आनन्द ले ।

रे हो दुनियां बांवरी, खोवत जनम गमार ।
दुनिया को तू कहा पुकारे, ए अपनो करे आहार ॥१८॥

दुनियां के रहने वाले बांवरे जीवों ! हीरे जैसा यह अनमोल मानव जीवन तुम व्यर्थ में गंवा रहे हो । यह ८४ लाख योनियों को भुगतने के बाद भवसागर से पार होने के लिये मिला है । तब श्री जी कहते हैं कि ऐसी अंहकार और स्वार्थ भरी दुनियां जिन्होंने अपनी मान प्रतिष्ठा को लक्ष्य बना रखा है उन्हें यह अखण्ड ज्ञान कैसे सुहायेगा ।

तूं भूल ना महामत, संभार अपना आप ।
सब स्याने अपने काम में लगे, तोहे विरह धाम का ताप ॥१९॥

हे महामति ! तुम भूल कर ऐसी लोभी और सपने की दुनियां को समझाने के लिये समय क्यों नष्ट कर रहे हो । अपनी आतम को धनी के चरणों में लगा । यह दुनियां बहुत स्यानी है । इसे माया की तड़प लगी हुई है । तुम्हें परमधाम की आतम होने से अपने धनी का विरह सता रहा है । इसलिये तुम अपने धनी को पाने में मग्न हो जा तथा इस झूठी दुनियां को छोड़ दे ।

इन चरचा होते भया, भाई महाव जी का इत काम ।
चरचा मीठी लगी इनको, दाखिल हुआ निजधाम ॥२०॥

इन चारों किरंतनों की चर्चा होने पर महाव जी भाई की आतम जागृत हो गई तथा उन्हें उस चर्चा में बहुत आनन्द आया । वे तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हो गये ।

Nijanand App

और भी केतेक साथी, आय पहुंचे इन ठौर ।
श्री राज की चरचा बिना, सूझत नाहीं और ॥२१॥

और भी सारे सुन्दरसाथ श्री जी का मस्कत में आना सुन कर इकट्ठे हो गये । उन्हें श्री जी की चर्चा के सिवाय अन्य कुछ भी अच्छा नही लगता था ।

एक दिन चरचा मिने, भई खण्डनी महावजी पर ।
वाकिफ पूरा न था साथ में, अवगुन भासा दिल ऊपर ॥२२॥

एक दिन महाव जी की किसी कमी पर श्री जी ने भरी सभा के अन्दर खण्डनी करके उसे समझाया। श्री जी से कुछ सांसारिक नाता होने के कारण वे उनकी पूरी पहचान नही कर सके थे । और अपना अपमान समझ कर श्री जी की तरफ से उदास हो गये ।

मैं न जाऊं उन पे, चरचा सुनने को ।
मुझ पर करी खण्डनी, क्या देखा अवगुन मुझमों ॥२३॥

मैं अब इनकी चर्चा सुनने नही जाऊंगा । इन्होंने मेरे किस अवगुन के कारण भरी सभा में मेरा अपमान कर दिया ।

रिसाय के आप अपने, रह गया घर में ।
चरचा समें न आइया, हुआ दिलगीर राज सें ॥२४॥

श्री जी से नाराज हो कर वे रूठ गये तथा चर्चा के समय सुनने नही गये तथा घर में ही दूसरी जगह बैठे रहे ।

जब सोया रात को, अपनी दुकान मों ।
रातें मारा तमाचा राज ने, हुई दहसत जोर इनको ॥२५॥

और रात्रि को सोने के लिये दुकान पर चले गये तथा अपने बेटे कान्ह जी को घर पर भेज दिया । रात को श्री राज जी ने अपने हुकम की शक्ति से सोते हुए महाव जी के मुंह पर जोर से जमाकर थप्पड़ मारा तो वह डर गया तथा उठ कर बैठ गया ।

क्यों रीस करी इन को, क्यों न दिये तुम कान ।
तूं जा फेर उतहीं, कर देख पहिचान ॥२६॥

जब वे उठे तो लगे हुए थप्पड़ के डर से मन का झूठा गुमान टूटा और होश आया कि मैं श्री जी से नाराज क्यों हुआ ? वे तो इतनी मेहर करने वाले हैं । उनकी चर्चा को मैंने ध्यान से क्यों नही सुना । मुझे फिर श्री जी के चरणों में जा कर क्षमा मांगनी चाहिए तथा उनकी चर्चा से उनके स्वरूप की पहचान करनी चाहिए ।

Nijanand App

जागे पीछे रोइया, प्रात बैठा आय द्वार ।
जगाये श्री जीय को, करने लगा मनुहार ॥२७॥

महाव जी भाई उठ कर अपनी इस भूल पर खूब रोये तथा प्रातः ३ बजे ही दुकान से आकर श्री जी के चरणों में आकर प्रणाम किया । श्री जी उठ बैठे । उसने अपनी भूल स्वीकार की और श्री जी से अर्जी की ।

रोय के कदमों लगा, अपनी कही बीतक ।
मुझे तमाचा मार के, मोंह फिराया हक ॥२८॥

उसने श्री जी के चरण पकड़ लिए तथा रोकर थप्पड़ लगने की सारी बात कही कि हे धनी ! मैं तो रूठकर चला गया था । आपने ही थप्पड़ मारकर मेरे गुमान को तोड़ा तथा अपने चरणों में बुला लिया।

मैं खण्डनी सुन के, होय गया बेजार ।
मैं तो कच्चा साथ में, ना पहिचाना परवरदिगार ॥२९॥

मैंने अपनी खण्डनी सुनी और दुखी हो गया । मेरा ईमान अभी कच्चा था । मैं अभी सांसारिक नाते से ही आपको देख रहा था । आतम सम्बन्ध से आप ही मेरे धाम के धनी हैं । इस बात को मैंने नही जाना था ।

इहाँ से चरचा मिने, भया पकव प्रवीन ।
चरचा सुनते सुनते, बड़ा भया आकीन ॥३०॥

अब जब उन्हें स्वामी जी के स्वरूप की पहचान हो गई तो वे पक्व प्रवीण होकर चर्चा सुनने लगे । जैसे-जैसे वे चर्चा सुनते गए वैसे-वेसे उनका ईमान पक्का होता गया । (चर्चा सुनने से ही ईमान पक्का होता है)

बेटा जोरू बाप महतारी, और कुटुम्ब परिवार ।
सो सब लगे लड़नें, ले दज्जाल हथियार ॥३१॥

महाव जी भाई की ऐसी मग्न अवस्था को देखकर तथा घर के काम-काज के प्रति लापरवाही को देखकर तथा हर समय श्री जी के चरणों में उन्हें लगा देखकर धर्म पत्नी, पुत्र, माता-पिता एवं सगे सम्बन्धी दज्जाल का रूप बनकर लड़ने लगे । (हे साथ जी ! श्री राजजी के प्रति इमान की राह में जो भी रोड़े अटकाता है, वह ही दज्जाल है)

Nijanand App

ओ तो लसकर दज्जाल का, करने लगा सोर ।
जोर लड़ाई उनों करी, जो था उनमें जोर ॥३२॥

माता, पिता, पत्नी, बेटा आदि सब महावजी के साथ लड़ने लगे तथा उन्होंने श्री जी के चरणों से अलग करने का बहुत प्रयास किया । वे समझ गए कि यदि ये इसी प्रकार चलते रहे तो इनके बिना हमारा घर बर्बाद हो जाएगा ।

एह ना डगा इन समें, थे श्री राज इनके साथ ।
जाको मदद हक की, धनीये पकड़े हाथ ॥३३॥

परन्तु महाव जी भाई को श्री जी की पहचान हो गई थी इसलिए उन्होंने किसी की भी परवाह नही की । श्री राजजी महाराज की मेहर तभी होती है जब उनकी पहचान हो जाती है ।

किने ना चला तिनसों, सिर भाना दज्जाल ।
इनको धाम धनीय का, बड़ा जो हुआ हाल ॥३४॥

घर वाले सभी लोग सिर पटक पटक कर रह गए किन्तु महाव जी पर उनका कुछ भी असर नही हुआ क्योंकि वे हमेशा श्री राजजी के ही आनन्द में मग्न रहते थे ।

इन समें साथ आइया, कहों जो तिन के नाम ।
पहिले सबसे आइया, विस्वनाथ इन काम ॥३५॥

इस प्रकार की चर्चा के प्रचार से जिस-जिस सुन्दरसाथ ने तारतम लिया । उनके नाम बताता हूं । सबसे पहले विश्वनाथ जी ने तारतम लिया ।

राधा बाई रूपा, और भाटिया प्रधान ।
और आया खट्टू, पहिले राजो को पहिचान ॥३६॥

राधा बाई, रूपा बाई, भाटिया प्रधान तथा खट्टू भाई सुन्दरसाथ में आए । राजो बहन पहले ही पहचान करके तारतम ले चुकी थी ।

और हीर जी भाटिया, और महावजी इन समें ।
और नारायण कायथ, रामें सुनी उन सें ॥३७॥

हीर जी भाटिया, महाव जी भाई, नारायण कायस्थ और रामे ने चर्चा सुनकर तारतम लिया ।

Nijanand App

और जीवा खम्भालिये का, संग जी आया इन ठाम ।
कान जी महावजी का, आए गंगा हीरा इसलाम ॥३८॥

जीवा भाई जो खंभालिये के रहने वाले थे और संग जी के साथ आए हुए थे । महाव जी के बेटे कान्ह जी और गंगा भाई तथा हीरा भाई भी तारतम लेकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए ।

और लखमन रंगानाथी, और मानजी जीवा वे ।
और रूप जी कामदार, और बेरसी सुनी ये ॥३९॥

लक्ष्मण भाई, रंगानाथी, मान जी, जीवा भाई और रूप जी भाई कामदार तथा बेरसी भाई भी चर्चा सुनकर श्री जी के चरणों में आए ।

एह आये इन समें, तामें चरचा बड़ी होए ।
सुख लिया इन साथ में, क्योंकर कहों मैं सोए ॥४०॥

ये वो आत्मायें थी जिनके कारण श्री जी को मस्कत बन्दर में आना पड़ा । इन्होंने चर्चा सुनकर धाम धनी की पहचान की तथा तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

उच्छव चरचा नित्याने, होत साथ मिने ।
हाथ पटके दज्जालें, ए मगन धाम मिने ॥४१॥

इस प्रकार सब सुन्दरसाथ तथा महाव जी भाई नित्य ही आनन्द मंगल से चर्चा सुनते हैं तथा उच्छव करते हैं । सांसारिक लोग जलते रहते हैं तथा सुन्दरसाथ श्री राज जी के आनन्द में मग्न रहते हैं ।

बन्दीवान के पैसे को, आए दरोगा करे पुकार ।
काफर गरजे सिर पर, क्यों होत न खबरदार ॥४२॥

उधर पुलिस के दारोगा को पता चल गया कि लोहाणा जाति को छुड़ाने वाले महाव जी भाई के घर आये हुए हैं । वहां आकर वह श्री जी से पैसे की मांग करता है और यह कहता है कि हे महाराज ! आप चर्चा में यहां मग्न हैं किन्तु आपकी जाति के लोग जेल में बन्द हैं । आप उन्हें छुड़ाइये ।

सिर पर साहिब जो, वह है खबरदार ।
हमको फिकर न कछुये, और कादर भरतार ॥४३॥

तब श्री जी ने उत्तर दिया कि दरोगा साहब ! अनाप-शनाप बोलने की कोई आवश्यकता नही है । उनके सिर पर जो परमात्मा है वह ही उनका पैसा देगा । मुझे उनकी कोई भी चिन्ता नही है क्योंकि उनका मालिक परमात्मा है ।

Nijanand App

बड़ो दृढ़ाव देख के, वह हो गया जेर ।
जिनकी ऐसी चरचा, फेर कहने आवे फेर ॥४४॥

ऐसा दृढ़ विश्वास देखकर वह दरोगा श्री जी के चरणों में गिर पड़ा । श्री जी के ऐसे महानता भरे शब्दों को सुनकर पैसा मांगने की गरज से वह बार-बार चर्चा सुनने आता है ।

इन मिस से इनके, करने आवे दीदार ।
चरचा सुने श्रवनों, कहे सुकर परवर दिगार ॥४५॥

इस बहाने से वह रोज आकर दर्शन भी करता है तथा अखण्ड तारतम का ज्ञान सुनकर परमात्मा का शुक्र भी बजाता है ।

इन भांत अट्ठाइसे साल में, रहे मसकत में ।
जात आप अपनी, सबों छुड़ाई आरबों सें ॥४६॥

सम्वत् १७२८ तक श्री जी तीन साल तक मस्कत में रहे तो बाकी लोग, जो दीपबन्दर से बन्ध में आए थे उनकी जाति के लोग उन्हें छुड़ाकर ले गए ।

यह बात भैरों सेठ सुनी, सबों छुड़ाई जात अपनी ।
रहे अबासी बन्दर, करों अपनी नेक नामी ॥४७॥

केवल लोहाणा जाति के लोग ही बन्ध में पड़े थे, जिसकी खबर आवासी बन्दर के लोहाणा जाति के बहुत बड़े सेठ भैरव ठक्कर को मिली कि बाकी सभी लोग अपनी जाति के लोगों को छुड़ा ले गए हैं । यदि मैं अपनी लोहांणा जाति के लोगों को बंध से छुड़ा लूंगा तो जाति बिरादरी के लोगों में मेरा नाम हो जाएगा ।

भेजे अपने आदमी, लेने को खबर ।
केते पैसे बंद के, है डांड इन ऊपर ॥४८॥

मैं पहले आदमी भेजकर यह पता तो लगाऊं कि मेरी जाति के लोगों पर कितने रूपयों का दण्ड है।

खबर लेके आदमी, दई उनें पहुंचाए ।
लहारी सत्तर हजार, इतनी देनी आए ॥४९॥

जब उसने अपने एक आदमी को मस्कत बन्दर जांच के वास्ते भेजा तो उसने आकर यह खबर दी कि अपनी जाति के सभी लोगों को छुड़ाने के लिए ७०,००० लहारी (रूपया) दण्ड में देना पड़ेगा ।

Nijanand App

महामति कहे ए साथ जी, है बहुत मसकत बीतक ।
सो आगे मजकूर होएगा, कहों अबासी बन्दर बुजरक ॥५०॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि मस्तक बन्दर की तो बहुत बड़ी बीतक है । आपको थोड़ी ही बतायी है अब आप अवासी बन्दर की महत्वपूर्ण बीतक सुनिए ।

(प्रकरण २६, चौपाई ११३२)

अबासी बन्दर की बीतक

अबासी बंदर में, भैरों रहे सिरदार ।
अपनी न्यात छुड़ावनें, हुआ खबरदार ॥१॥

अवासी बन्दर में भैरों ठक्कर एक बहुत बड़े धनवान रहते थे । अपनी जाति के लोगों को छुड़ाने के लिए वह तैयार हो गए ।

भेजे अपने आदमी, मसकत बन्दर में ।
छुड़ाय ल्याया न्यात को, आया आबासी बन्दर अपने ॥२॥

उन्होंने अपने आदमियों को मस्कत बन्दर भेजा और फिर स्वयं मसकत बन्दर जाकर उन्हें छुड़ा कर आबासी बन्दर ले आया ।

भई मुलाकात भैरों से, श्री जी साहिब जी सों जब ।
अपने घरों ले गया, खिजमत करने लगा तब ॥३॥

मस्कत बन्दर में भैरों ठक्कर की जब श्री जी से मुलाकात हुई तो श्री जी एवं सुन्दरसाथ को वह अपने घर ले आये तथा स्वयं सेवा करने लगे ।

खेम कुसल बातें पूछी, अपने देस परदेस ।
सब बात का उत्तर, बताए दिया खेस ॥४॥

भैरों सेठ ने श्री जी को अवासी बन्दर लाने के बाद उनके चरणों में बैठ कर सब प्रकार का कुशल-क्षेम पूछा । तब जो जो उन्होंने पूछी उसका श्री जी उत्तर देते गए ।

भई पहिचान आपस में, हुआ रसोई का आदर ।
जागा अपने नजीक, उतारे अपने घर ॥५॥

लोहाना जाति के होने के कारण से आपस में जाति सम्बन्ध की पहचान हुई । तब सुन्दरसाथ एवं श्री जी को भोजन आरोगाने के लिए आदर किया, श्री जी को अपने घर के साथ लगती हुई हवेली में ठहराया तथा सुन्दरसाथ को भी वही रहने की व्यवस्था कर दी ।

Nijanand App